



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

रेणु के रिपोर्ताज : संवेदनाओं के सजीव दस्तावेज

डॉ. चन्द्र प्रकाश शर्मा

सहायक आचार्य हिंदी

राजकीय महाविद्यालय, दोसा (राज.)

कुवेर सिंह मीना

सह आचार्य हिंदी

राजकीय महाविद्यालय, दोसा (राज.)

Email - cpshell.prashant@gmail.com, Mobile - 9414638256

Email - kskaima2000@gmail.com, Mobile- 9414202550

First draft received: 18.08.2026, Reviewed: 22.08.2026

Final proof received: 25.08.2026, Accepted: 20.09.2026

सारांश

परिवेश का चित्रण रिपोर्ताज का महत्वपूर्ण घटक है। यह परिवेशगत चित्रण ही रिपोर्ताज को जीवंत बनाता है साथ ही इसे वह आंचलिकता भी प्रदान करता है। फणीश्वर नाथ रेणु की तरह ही मणिमधुकर, विवेकीराय, धर्मवीर भारती आदि साहित्यकारों ने विशेष रूप से इस तत्व को अपने रिपोर्ताजों में उभारा है। घटनाओं के यथातथ्य वर्णन में रिपोर्ताज अपनी विधागत सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए आंचलिक उपन्यास के नजदीक जा पहुँचता है किंतु रिपोर्ताज उपन्यास की तरह कथातत्त्व का न तो विस्तार करता है और न ही मार्मिक घटना की उस वेधकता से अपने आप को अलग करता है। फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी के उन लेखकों में से हैं जिन्होंने लगभग तीन दशकों तक थोड़े बहुत अंतराल के साथ लगातार रिपोर्ताज लिखे। उन्होंने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने रिपोर्ताजों में उभारा है। वे मूलतः कथाकार थे, पर उनका मन कवि और संगीतकार का था जो जीवन की विभिन्न स्वर लहरियों को सुन सकने और उसकी परख-पहचान करने में अचूक था।

मुख्य शब्द - जर्नल, आंचलिकता, यथार्थ, प्रतिबद्धता, सरोकार, दिशासूचक, ऋणजल, धनजल पगडंडी, जीवंत.

प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी के महत्वपूर्ण रिपोर्ताजकारों में से एक हैं। हिंदी में रेणु की प्रतिष्ठा एक कथाकार के रूप में है, पर यदि देखा जाए तो वास्तव में वे कहानी, उपन्यास या रिपोर्ताज के माध्यम से धरती पुत्रों की रपट ही दर्ज कराते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ने अकाल और बाढ़ पर लिखी इसी प्रकार की रिपोर्टिंग को 'ऋणजल धनजल' की भूमिका में 'जर्नल' कहा है। उनकी रचनाओं में साहित्य की विविध विधाओं के अलग-अलग रूप एक साथ दिखाई पड़ते हैं। इसलिए उनकी रचनाएँ विधाओं की शास्त्रीय मर्यादाओं को अतिक्रान्त करती हैं और उनके रिपोर्ताजों में कहानी, कविता, नाटक और संगीत सभी एक जगह दिखाई देते हैं। इसी तरह उनके उपन्यासों, खासकर 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' में अनेक अंश ऐसे हैं जिन्हें स्वतंत्र रिपोर्ताज की तरह पढ़ा जा सकता है। कुछ विद्वान रिपोर्ताज को निबंध संवर्ग की विधा मानते हैं, पर स्वयं रेणु रिपोर्ताज को कथा संवर्ग में रखना चाहते हैं। धर्मयुग पत्रिका में 1963-64 में हिंदी के महत्वपूर्ण कथाकारों की कहानियाँ प्रकाशित की गई थीं। उन कहानियों के बीच 'रेणु' का कथा रिपोर्ताज 'पुरानी कहानी : नया पाठ' प्रकाशित हुआ। इस रिपोर्ताज के साथ रेणु का यह कथन बहुत ही महत्व का है- "गत महायुद्ध ने चिकित्सा क्षेत्र के चीर-फाड़ (शल्य चिकित्सा) विभाग को पेनसिलिन दिया और साहित्य के कथा विभाग को रिपोर्ताज।"¹ रेणु के इस कथन में यह आग्रह साफ देखा जा सकता है कि रिपोर्ताज को कथा-साहित्य की ही एक उपविधा माना जाना चाहिए। उनके अधिकांश रिपोर्ताजों में कथा अंश विद्यमान भी है।

डॉ. हरिमोहन ने रिपोर्ताज को आंचलिक उपन्यास के निकट बताया है और लिखा है कि- "रिपोर्ताज आंचलिक उपन्यास के निकट की विधा कही जा सकती है। वातावरण को जितनी जीवंतता के साथ लेखक प्रस्तुत कर सकेगा, उसका लिखा रिपोर्ताज उतना ही प्रभावशाली और सफल बन सकेगा।"²

रेणु का पहला रिपोर्ताज 'बिदापत-नाच' साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में 1945 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने प्रारंभ में बड़ी संख्या में अनेक रिपोर्ताज लिखे लेकिन उनमें से काफी ऐसे हैं जो अब तक उपलब्ध नहीं हो पाये हैं। रेणु रचनावली के संपादक भारत यायावर ने ऐसे ही अनुपलब्ध रिपोर्ताजों की सूची प्रस्तुत की है जिसमें अप्रकाशित व अनुपलब्ध रिपोर्ताजों के नाम हैं।

रेणु व्यक्तित्व के प्रति बहुत अधिक सजग थे। रेणु के कथा लेखन पर लोगों ने आंचलिकता का सवाल उठाया है कि उनकी आंचलिकता नगर संस्कृति के प्रतिलोम के रूप में उपजी है जिसे स्पष्ट करते हुए रघुवीर सहाय ने कहा है कि वह उनके व्यक्तित्व के आंचलिक या नागर होने की नहीं, बल्कि उसकी विश्वसनीयता की अभिव्यक्ति है। आंचलिक जैसी कोई शैली या विषयवस्तु होती ही नहीं। उनका संबंध लोगों से था। उनके लिए लोग ही सत्य थे-चाहे वे कहीं के रहने वाले हों। रेणु वस्तुतः इन्हीं लोगों के संदेशवाहक हैं। वे जिसका संदेश लाते हैं, उनके जैसे हुए बिना ला नहीं सकते ...। रेणु के ज्यादातर रिपोर्ताज इन्हीं लोगों से उनके सच्चे राग की उपज हैं।

रेणु का पहला रिपोर्ताज 'बिदापत नाच' साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में 1945 में प्रकाशित हुआ था और अंतिम पटना जल प्रलय पर 1975 में। इन तीस वर्षों की अवधि में उन्होंने अनेक रिपोर्ताज लिखे। लेखन के प्रारंभिक दौर से अंतिम पड़ाव तक रिपोर्ताज विधा से उनका गहरा जुड़ाव रहा। रेणु ने इस विधा को हिंदी में विकास के चरम पर पहुँचाया है। रेणु के रिपोर्ताजों में 1945 से 1975 तक के बीच की कई भूली-बिसरी घटनाएँ, कथाएँ और प्रसंग और जीवन स्थितियाँ बयान की गई हैं, जिनमें रेणु का अपना असली व्यक्तित्व, उनकी विभिन्न प्रकार की मनः स्थितियों, उनकी आस्था और विश्वास के भी दर्शन होते हैं। रेणु के रिपोर्ताज उस समय की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, यथा- 'विश्वमित्र', 'जनता', 'जनवाणी', 'अणिमा', 'धर्मयुग', 'दिनमान' आदि में यथासमय प्रकाशित हुए। इनमें से 'ऋणजल धनजल',

‘नेपाली क्रांतिकथा’ और ‘वन तुलसी की गंध’ आगे चलकर पुस्तकाकार भी छपे।

‘ऋणजल धनजल’ रिपोर्ताज संग्रह स्वयं रेणु ने तैयार किया था। इसमें 1966 में दक्षिणी बिहार के विकराल अकाल और 1975 में पटना की प्रलयकारी बाढ़ का वर्णन है। रघुवीर सहाय ने इन दो प्रकार की घटनाओं को एक साथ रखने में लेखक का सोचा - विचार प्रयोजन लक्षित किया है- “उन्होंने यह संकलन तैयार करते हुए ऊपर से देखने पर दैवी, परंतु वास्तव में मानवकृत संकटों के अपने नौ वर्ष पहले और बाद के अनुभवों को अंतर्भूत माना। रेणु ने इस संकलन की एक भूमिका लिखे जाने की सूचना फरवरी 1976 के एक पत्र द्वारा प्रकाशक को दी है- ‘जिस दिन भूमिका लिखने बैठा, चासनाला खदान की अभूतपूर्व दुर्घटना घट गई ... भूमिका में 15 जनवरी 34 के भूकंप से लेकर अब तक के दैवी प्रकोपों के (जिन्हें याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं) छुटपुट संस्मरण हैं मैंने अपनी इन रचनाओं को ‘जुर्नल’ कहा है।”³ यह भूमिका कभी प्राप्त नहीं हुई, इसलिए कहीं छपी भी नहीं; पर यह पत्रांश रेणु के रिपोर्ताज संग्रह के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बातों की तरफ संकेत करता है। रेणु के इन संग्रहों के अलावा अब उनके सभी उपलब्ध रिपोर्ताज भारत यायावर द्वारा संपादित रेणु रचनावली के चौथे खंड में संगृहीत हैं।

रेणु का पहला रिपोर्ताज ‘विदापत नाच’ उनके अंचल के दलित वर्ग में प्रचलित अनूठे ‘नृत्य संगीत’ पर केंद्रित है। यह रिपोर्ताज सामाजिक व्यवस्था के भेदभाव के साथ ही उनकी मानवीय संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों को भी हमारे सामने लाता है तथा उस अंचल के वर्ग विशेष की विषेपताओं को ही सामने नहीं लाता अपितु संवेदनशीलता के साथ पूरे परिवेश को चित्रित करता है। इस रिपोर्ताज का समापन अंश रेणु की इस संवेदनशीलता का जीता जागता उदाहरण है- “दुखी, दीन, अभावग्रस्तों ने घड़ी भर हँस गाकर जी बहला लिया, अपनी जिंदगी पर भी दो चार व्यंग्य बाण चला दिये, जी हलका हो गया। अर्द्धमृत वासनाएँ थोड़ी देर के लिए जर्गी, अतृप्त जिंदगी के कुछ क्षण सुख से बीते। मेहनत की कमाई मुट्ठी भर अन्न के साथ-साथ आज इन्हें थोड़ा सा ‘मोहक प्यार’ भी मिलेगा, इसमें संदेह नहीं। आप खोज रहे हैं-आर्ट, टेकनीक और न जाने क्या-क्या, और मैं आपसे चलते-चलते फिर भी अर्ज करता हूँ कि यह महज विदापत नाच था।”^{4,5}

महज विदापत नाच कहकर लेखक ने उस पूरे समाज की व्यथा और वेदना को समेट कर पाठक के समक्ष रख दिया है। रेणु केवल किसी अंचल के भाषा एवं व्यवहार को ही नहीं चुनते बल्कि उस पूरे परिवेश को चित्रित करते हैं तथा छोटी से छोटी आंचलिक विशेषता को भी छोड़ते नहीं हैं। रिपोर्ताज में घटना के वर्णन के लिए जिस तरह के परिवेश की आवश्यकता होती है वैसे ही जीवंत चित्रण रेणु के रिपोर्ताजों में मिलता है।

नेपाल के दो बड़े जन आंदोलनों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। विराटनगर के मिल मजदूरों की बदतर जीवन स्थितियों और राणाशाही का यथार्थ चित्र उन्होंने ‘सरहद के उस पार’ रिपोर्ताज में अंकित किया है। यह एक संयोग ही कहा जा सकता है कि यह रिपोर्ताज 2 मार्च 1947 को साप्ताहिक ‘जनता’ में प्रकाशित हुआ और उसके ठीक दो दिन बाद विराटनगर के मिल मजदूरों का ऐतिहासिक आंदोलन शुरू हुआ। उन्होंने इस क्रांति पर केंद्रित एक लंबा रिपोर्ताज उन्हीं दिनों ‘हिल रहा हिमालय’ शीर्षक से लिखा जो धारावाहिक रूप में साप्ताहिक ‘जनता’ में प्रकाशित हुआ था। इसी का परिवर्धित रूप 1971 में ‘दिनमान’ के अंकों में भी धारावाहिक रूप में छपा और अब ‘नेपाली क्रांति कथा’ शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित है। रेणु एक ऐसे साहित्यकार थे जो एक ओर तो अपनी रचनाधर्मिता के प्रति समर्पित रहे, दूसरी ओर राजनीति में भी उनकी सतत सक्रियता रही और यह राजनीतिक गतिविधि स्वदेश तक ही सीमित नहीं रही, पड़ोसी देश नेपाल के राजनीतिक आंदोलनों से भी उनका गहरा जुड़ाव रहा। ‘नेपाली क्रांति कथा’ शीर्षक से ये बोलते रिपोर्ताज उनके अन्य रिपोर्ताजों से भिन्न हैं। इनमें किसी स्थान या घटना का महज आँखों देखा विवरण नहीं बल्कि एक मुक्तियुद्ध का जीवंत चित्रण है- ‘नेपा-ली-ई-ई-नेपा-ली-ई !! रात आधी बीत चुकी है और पूर्वी मोर्चे के शिविरों में मुक्ति सैनिक रतजगा कर रहे हैं। बड़े-बड़े बक्सों से राइफलें निकाली जा रही हैं। मित्रदेश से आयी हुयी राइफलें और प्रचुर मात्रा में श्री-नाट-श्री बुलेट। सारे शिविर में - शिविर के साढ़े पाँच सौ मुक्ति सैनिकों की देह में उत्तेजना की लहर दौड़ रही है। वे तैयार हो रहे हैं। कोई आकर इनका साज सिंगार देखा। बूट पट्टी बाँधते हुए, कमर के बेल्ट को कसते हुए-वे गुनगुना रहे हैं- एक सबसे मधुर गीत, जययात्रा का प्रसिद्ध गीत- नेपाली! नेपाली!..... रक्त माँगता है आज!.....मुक्तियुद्ध, मुक्तियुद्ध!.....!’⁶

साहित्यकार की यह विशेषता होती है कि वह समाज में घटित हो रही घटनाओं से स्वयं को दूर नहीं रख पाता है। रेणु की भी यह विशेषता थी कि वे आसपास समाज में घट रही घटनाओं से निरंतर जुड़ाव रखते हैं। इसीलिए रेणु के विषय में विजयमोहन सिंह ने लिखा है कि “मेरी दृष्टि में रेणु ही हिंदी के सर्वोत्तम रिपोर्ताज लेखक हैं।”⁷ उनका संबंध किसान आंदोलनों से भी रहा है। 25 नवंबर 1949 को पटना में ऐतिहासिक किसान सम्मेलन हुआ था। इस पर केंद्रित उनका रिपोर्ताज ‘नये सवरे की आशा’ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नेपाली क्रांति, किसान आंदोलन और आगे चलकर संपूर्ण क्रांति से जुड़ाव, आजादी और सुराज को लेकर उनकी प्रतिबद्धता और सरोकारों के दिशासूचक हैं। ‘एकलव्य के नोट्स’ उनका एक ऐसा रिपोर्ताज है जो गांवों में हो रहे परिवर्तनों का बड़ी बारीकी से चित्रण करता है। उनकी नज़र कितनी बारीकी से चीजों को देखती है, उसका उदाहरण यहाँ देखा जा सकता है- “गाँव की अली-गली अगवार पिछवाड़ा की ओर निकलने वाली पगडंडियाँ बंद की जा रही हैं। डर है, नक्शा बन जाने का। खेत के बीचों बीच पगडंडी अगर नक्शे में दर्ज हो गई तो हो चुकी होती।”⁸

रेणु के रिपोर्ताज संग्रह ‘ऋणजल धनजल’ में संस्मरणात्मक रिपोर्ताज मानव यातना के चरम साक्षात्कार के रूप में संकलित हैं। सन् 1966 के भयानक अकाल की काली छाया ने पूरे दक्षिण बिहार को अपनी चपेट में ले लिया और धरती पर कंकाल ही कंकाल नजर आने लगे थे तथा सन् 1975 की प्रलयकारी बाढ़ का पानी पटना की सड़कों पर दौड़ने लगा था उस समय लाखों लोगों का जीवन संकट में पड़ गया था। संवेदनाओं के शिल्पकार रेणु प्राकृतिक प्रकोप की इन दानों ही संकटकालों के प्रत्यक्षदर्शी रहे थे। पटना में आयी बाढ़ के दौरान तो कई दिनों तक एक मकान के दुतल्ले पर घिरे रह जाने के कारण स्वयं इस प्रलय लीला के भुक्तभोगी भी रहे। अपने सामने और अपने चारों ओर मानवीय विवशता और यातना का वह विकट हाहाकार देखकर उनकी वेदना का उमड़ उठना स्वाभाविक ही था, जिसका चित्रण हमें इस संग्रह में दिखाई देता है।

‘ऋणजल धनजल’ को सुरेंद्र चौधरी ने एक अतिकाय दुःस्वप्न कहा है। रेणु ने बाढ़ पर ‘कुत्ते की आवाज’ रिपोर्ताज में लिखा है कि- “धर्मयुग में कथा-दशक के अंतर्गत बाढ़ की पुरानी कहानी को नये पाठ के साथ प्रस्तुत कर चुका हूँ। जय गंगा (1947), डायन कोशी (1948), हड्डियों का पुल (1948) आदि छुटपुट रिपोर्ताज के अलावा मेरे कई उपन्यासों में बाढ़ की विनाश लीलाओं के अनेक चित्र अंकित हुए हैं। किंतु गाँव में रहते हुए बाढ़ से घिरने, बहने, भँसने और भोगने का अनुभव कभी नहीं हुआ। वह तो पटना शहर में 1967 में ही हुआ, जब अठारह घंटे की अविराम वृष्टि के कारण पुनपुन का पानी राजेंद्र नगर, कंकड़बाग तथा अन्य निचले हिस्सों में घुस आया था। अर्थात् बाढ़ को मैंने भोगा है, शहरी आदमी की हैसियत से।”⁹

अकाल पर लिखे गए रिपोर्ताजों की तरह ही बाढ़ पर लिखे गए रिपोर्ताजों में भी जीवन की विपरीत परिस्थितियों एवं संकटों से घिरे मानव की विभिन्न भंगिमाओं को उभारने में रेणु ने व्यंग्य का सहारा लिया है लेकिन उनका यह व्यंग्य जीवन की गहरी करूणा और वेदना से उभरकर आया है। पहले बाढ़ और उसके बाद सूखा। पहले भी रेणु ने 1950 में ‘हड्डियों का पुल’ शीर्षक से एक रिपोर्ताज लिखा था। 1950 में पूर्णिया शहरसा का अकाल यानी अन्न संकट और भुखमरी बाढ़ आने के बाद की पैदा हुई स्थिति को बयान करता है जबकि 1966 का दक्षिण बिहार का अकाल सूखे यानी अनावृष्टि के कारण पड़ा था। अकाल पर लिखे इन दोनों रिपोर्ताजों की परिस्थितियाँ भिन्न हैं पर इन दोनों रिपोर्ताजों में रेणु हमें भूखे, नंगे, शोषित-वंचित वर्ग के लोगों के बीच चुपचाप ले जाकर खड़ा कर देते हैं और संकटों से पीड़ित मानव की दशा और मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण करते हैं। सूखे की इस रपट में कुतूहलजनित नाटकीयता नहीं है। बाढ़ का कारण तो दृश्य है, पर सूखे का कारक अदृश्य है। सूखा क्या मनुष्य की अपरिवर्तनीय नियति है? क्या ईश्वर इसका एक अकेला निर्देशक है या इसके पीछे मनुष्यकृत व्यवस्था की विडंबनाएँ भी हैं? इन सवालों के जबाब रेणु के इन रिपोर्ताजों में देखे जा सकते हैं या यूँ कहें कि ये सवाल ही इन रिपोर्ताजों का ताना बाना बुनते हैं। दक्षिण बिहार के इस अकाल को रेणु ने ‘दिनमान’ के प्रधान संपादक अज्ञेय के साथ अपनी आँखों से देखा था। उसका एक साक्ष्य ‘भूमिदर्शन की भूमिका’ से देखा जा सकता है- “सूझे लगा, अज्ञेय की आँखों के सामने भी उन्हीं की मूर्तियाँ प्रकट हुईं। ‘वेजिटेबल स्टिउ’ के बारे में कुछ कहना चाहते थे। नहीं कह सके। हम कुछ क्षण तक हाथ में रोटी के टुकड़े लेकर बैठे रहे। महुआ की आधी रोटी और खेसारी का घाटा खाकर बड़े चिरकुट कथरी के नीचे घुटने से ठुड़ी लगाकर सो गये होंगे। खैर साहब ने कहा है, शीघ्रातिशीघ्र उन इलाकों में रेडकार्ड बंट जाएंगे। विदेशों से मिल्क पाउडर, विटामिन की

गोलियाँ और जैम जेली के हजारों हजार डिब्बे आ रहे हैं। कोई भूख से नहीं मरेगा।”¹⁰

रेणु ने 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध पर ‘युद्ध की डायरी’ तथा बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम पर ‘श्रुत-अश्रुत पूर्व’ नाम से रिपोर्ट लिखे हैं। उनका ‘रस के बस में- चार रात’ रिपोर्ट रामकृष्ण मिशन, पटना में चार रातों तक चले कार्यक्रमों पर लिखा गया रिपोर्ट है।

रिपोर्टाज के विषय में अरुण प्रकाश ने लिखा है कि “इन दिनों रिपोर्टाज कहानी/उपन्यास/नाटक के मुकाबले अधिक लोकप्रिय है क्योंकि ऐतिहासिकता का इसका दावा पाठकों को उचित लगता है। रिपोर्टाज समाज सत्य की अभिव्यक्ति है, राष्ट्र एवं उसके सामूहिक तथा सामाजिक शक्तियों के पहचान का रूपबंध भी है। उसे शुष्क तरीके से नहीं बल्कि यथार्थ के नाट्यकरण के जरिये समझा जा सकता है।”¹¹ ये पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि रिपोर्टाज ने विधा के रूप में बड़ी तेजी से पहचान बनाई है। रेणु जब किसी घटना का वर्णन करने लगते हैं तो पाठक को उस घटना की जड़ में ले आते हैं। वे ब्यौरा देने में केवल वातावरण निर्माण तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि पूरे परिवेश को स्वयं आत्मसात करते हैं और फिर पाठक को घटना के मर्म तक पहुँचाकर दम लेते हैं। घटना प्राकृतिक भी हो सकती है और मानवकृत भी पर उसके रिश्तों को सामाजिक और मानवीय हित में तय करना रेणु के इन रिपोर्टाजों का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

शोध निष्कर्ष

फणीश्वर नाथ रेणु ने अपने रिपोर्टाजों में कथा साहित्य की तरह आंचलिकता को बनाए रखा है। उन्होंने रिपोर्टाजों को शास्त्रीय शिल्पगत सीमाओं में बाँधा नहीं है इसलिए उनके रिपोर्टाजों में घटनाओं के वर्णन के लिए खुला अवकाश मिलता है। इसी का पूरा फायदा उठाते हुए रेणु अपने अंचल के पूरे के पूरे परिवेश का सजीव चित्रण करते हुए पाठक के समक्ष हर वर्ग की संवेदनाओं को चित्रित किया है। हिंदी में रांगेय राघव, धर्मवीर भारती, कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’, निर्मल वर्मा जैसे अनेक लेखकों ने रिपोर्टाज लिखे हैं लेकिन रेणु के रिपोर्टाज अन्य लेखकों से अलग रंग रूप वाले हैं, स्वयं उनके अपने रिपोर्टाजों की यदि तुलना की जाए तो उनके बीच भी उसकी अनेक भंगिमाएँ दिखाई देती हैं। उनके रिपोर्टाजों की कलात्मक संरचना विशिष्ट है। उनमें व्यंग्य है, नाटकीयता है और संवेदनाओं का अविरल प्रवाह भी। कथा, डायरी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र तथा निबंध जैसी नाना प्रकार की विधाएँ उनके यहाँ आकर उनकी संवेदना से समरस और एकाकार होकर रिपोर्टाज का निर्माण करती हैं। उनका ‘ऋणजल धनजल’ रिपोर्टाज संग्रह तो उनके अपने और हिंदी रिपोर्टाजों में भी बेजोड़ है।

संदर्भ ग्रंथ

1. रेणु रचनावली - सं. भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, दूसरा संस्करण 1999, संपादकीय भाग, पृ. सं. - 9
2. साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार - डॉ. हरिमोहन, दिवि पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1999, पृ. सं. - 282
3. ऋणजल धनजल - फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण 2016, भूमिका भाग, पृ. सं. - 14
4. रेणु रचनावली - सं. भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 1999, खंड- 4, संपादकीय, पृ. सं. - 9
5. सामाहिक विश्वमित्र, अंक 1 अगस्त 1945
6. नेपाली क्रांति कथा - फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2009, पृ. सं - 43
7. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण - विजयमोहन सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014, पृ. सं. 706
8. रेणु रचनावली - सं. भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 1999, खंड- 4, एकलव्य के नोट्स, पृ. सं. - 76
9. ऋणजल धनजल - फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण 2016, पृ. सं. - 24

10. रेणु रचनावली - सं. भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 1999, खंड- 4, भूमिदर्शन की भूमिका, पृ. सं. - 175 तथा दिनमान, 6 जनवरी, 1967
11. गद्य की पहचान : अरुण प्रकाश, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. 2012, पृ. सं. 177,179